IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

भारत में सतत आजीविका के लिए कौषल विकास (विशेष रुप से प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के संदर्भ में)

डॉ नीलम

एसोसिएट प्रोफेसर

, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर।

प्रस्तावनाः– सतत आजीविका के लिए कौशल विकास की भूमिका

सतत एवं टिकाऊ आजीविका के लिए कौशल विकास पर्यावरणीय स्थिरता, सामाजिक समानता और लचीलेपन को बढ़ावा देते हुए आर्थिक रूप से आगे बढ़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और क्षमताओं के साथ व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। यह ऐसे अवसर पैदा करने का एक अनिवार्य हिस्सा है जो गरीबी को कम करता है, आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है और यह सुनिश्चित करता है कि लोग प्राकृतिक संसाधनों को कम किए बिना या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना आजीविका कमा सकें। कौशल विकास (सस्टेनेबल स्किल डपलपमेंट) किसी भी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल रोजगार के अवसर बढ़ाता है, बल्कि सतत आजीविका (सस्टेनेबल स्किल डपलपमेंट) को भी सुनिश्चित करता है। वर्तमान समय में तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के कारण रोजगार के स्वरूप में तेज़ी से बदलाव हो रहा है, जिससे नई पीढ़ी को उन्नत और व्यावहारिक कौशल सीखने की आवश्यकता है। यह शोधपत्र कौशल विकास और सतत आजीविका के बीच संबंधों को स्पष्ट करता है, भारत सरकार की नीतियों का विश्लेषण करता है और इस क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों व उनके संभावित समाधानों पर प्रकाश डालता है।